Title: Need to include Buddhists in the category of Scheduled Castes in Maharasthra and other parts of the country.

SHRI RAMDAS ATHAWALE (PANDHARPUR): Thank you very much.

अध्यक्ष महोद्य, 14 अक्टूबर, 1956 के दिन डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी ने हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी। उस समय महाराट्र के महासमाज ने उनके बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद उनको मिलने वाली शैड्यूल कास्ट्स की सारी सुविधायें रद्द कर दीं। वर्ा 1965 में जब श्री यशवंत राव चव्हाण महाराट्र के मुख्य मंत्री थे, तब उन्होंने महाराट्र स्टेट में शैड्यूल कास्ट्स को मिलने वाली सारी सुविधायें उन्हें दे दीं। इसके बाद जब श्री वी.पी. सिंह केन्द्र में प्रधान मंत्री थे तब उन्होंने भारत सरकार की नौकरियों और एजुकेशन में शैड्यूल कास्ट्स को मिलने वाली सारी सुविधायें बौद्धों को दे दीं। अभी 2001 की जनगणना में जो लोग बुद्धिस्ट हैं, ऐसे साढ़े छः प्रतिशत बुद्धिस्ट लोगों को महाराट्र की एस.सी. सूची से निकाला गया है। यहां पर गृह मंत्री जी बैठे हुए हैं। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि श्री वी.पी. सिंह जब प्रधान मंत्री थे तब एस.सी. लोगों को मिलने वाली सारी सुविधायें बुद्धिस्ट को देने का निर्णय हुआ था लेकिन वर्ा 2001 की जनगणना में उन बुद्धिस्ट्स को एस.सी. की सूची से निकाल दिया गया है। यदि एस.सी. लोगों को मिलने वाली सारी सुविधायें अगर बुद्धिस्ट को देने का निर्णय केन्द्र सरकार ने किया है तो उन्हें एस.सी. सूची से निकालने का जो गलत निर्णय हुआ है, उसे सुधारना चाहिए। इसी के साथ-साथ जो 6.5 प्रतिशत बुद्धिस्ट लोग हैं, उन्हें एस.सी. लोगों को मिलने वाली सुविधायें देनी चाहिए।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि जब केन्द्र ने बौद्धों को शैड्यूल कास्ट्स की सुविधाएं देने का निर्णय लिया है तो महाराट्र में पहले एस.सी. लोगों के लिए छः सीटें लोक सभा के लिए रिजर्व थीं लेकिन बौद्ध बनने से वे तीन हो गयीं। इसी तरह विधान सभा की जो 36 सीटें थीं, वे 18 हो गयीं। मेरी मांग है कि जब केन्द्र सरकार ने 1991 में यह निर्णय लिया है कि एस.सी. लोगों को मिलने वाली सभी सुविधायें बौद्धों को देनी है तो महाराट्र में लोक सभा की तीन और विधान सभा की 18 सीटें बढ़ानी चाहिए। यहां पर गृह मंत्री महोद्य बैठे हुए हैं। मेरी मांग है कि वे इस पर कुछ कहें।

MR.SPEAKER: I cannot compel any of the hon. Minister. It depends on your persuasiveness.

Dr. K. S. Manoj, you gave notice beyond time. Therefore, today as an exception, I am giving you a chance.

DR. K.S. MANOJ (ALLEPPEY): Sir, I have already associated with him.

MR. SPEAKER: Have you associated? Do you not want to say anything more? Do you want to mention anything?

DR. K.S. MANOJ : Yes, I want to say.

MR. SPEAKER: Then you come to it. Otherwise your turn will be lost.